Patrika (Indore), 24th April 2026, Page – 05

#IITIndore

बारिश के पानी को संजोने बदला परिसर का इकोसिस्टम

'वॉटर मैनेजमेंट मॉडल' बना हरियाली की पहचान

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

इंदौर. शहर में पानी की कमी और गर्मी के बीच हरियाली को बचाए रखना चुनौती बन जाता है, वहीं आइआइटी इंदौर ने अपने कैंपस में अलग मिसाल पेश की है। यहां बीते कुछ सालों में पानी बचाने और उसे सही तरीके से इस्तेमाल करने की कोशिशों ने परिसर की हरियाली ही बदल दी है।

संस्थान ने सिर्फ पानी बचाने तक खुद को सीमित नहीं रखा, बल्कि बारिश के पानी को रोकने, जमा करने और जमीन में उतारने के लिए बड़े

स्तर पर काम किया। कैंपस में जलाशय, चेक डैम और रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम बनाए गए, ताकि पानी जमीन में समा सके। इसका सीधा फायदा यह हुआ कि मिट्टी में नमी बनी रही और पौधों को लंबे समय तक पानी मिलता रहा।

हर मौसम में हरियाली बेहतर: इन प्रयासों का असर अब दिखने लगा है। 2021 से 2025 के बीच सैटेलाइट से किए गए अध्ययन (जिसे नॉर्मलाइज्ड डिफरेंस वेजिटेशन इंडेक्स कहा जाता है) में कैंपस की हरियाली में लगातार सुधार दर्ज किया गया है। आमतौर पर मार्च से मई के गर्म और सूखे महीनों में हरियाली घट जाती है, जबकि अगस्त से अक्टूबर के बीच बढ़ती है, लेकिन 2022 के बाद से हर मौसम में हरियाली का स्तर पहले से बेहतर बना हुआ है।

'सूखे' महीनों में भी 'सेहतमंद' रहते हैं पौधे

खास बात यह है कि अब सूखे महीनों में भी पौधे पहले की तुलना में हरे-भरे बने रहते हैं। इसका मतलब है कि जमीन में नमी और भूजल का स्तर बेहतर है, जो मध्य भारत जैसे इलाकों में बड़ी उपलब्धि मानी जा रही है। संस्थान के निदेशक सुहास जोशी के मुताबिक, यहां स्थिरता (सस्टेनेबिलिटी) सिर्फ एक लक्ष्य नहीं, बल्कि कैंपस के हर विकास कार्य का हिस्सा है। प्रोजेक्ट से जुड़े प्रो. मनीष कुमार गोयल ने बताया, सैटेलाइट डेटा और जमीनी उपायों को साथ जोड़कर काम करने से मिट्टी की नमी और भूजल दोनों को बेहतर तरीके से संभाला जा सका है।